पढ़ना
समझना
पका आम

प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

चित्रांकन – जोएल गिल

सज्जा तथा आवरण – निधि वाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर – अर्चना गुप्ता, नीलम चौधरी, अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलेपमेंट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफ़ेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा.शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुजहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए, मथुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)
978-81-7450-858-4

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। *बरखा* की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। *बरखा* बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए '*बरखा*' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। *बरखा* पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। *बरखा* से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक *बरखा* को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे, बनाशंकरी III स्टेज, बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी, कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स, मालीगाँव, गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : पी. राजाकुमार
मुख्य उत्पादन अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य संपादक : श्वेता उप्पल
मुख्य व्यापार अधिकारी : गौतम गांगुली

पका आम
तोसिया

तोसिया के स्कूल में एक आम का पेड़ था।
उस पर बहुत आम लगते थे।
स्कूल के सभी बच्चे उसके आम खाते थे।
कभी-कभी आम के पेड़ पर बंदर भी आते थे।
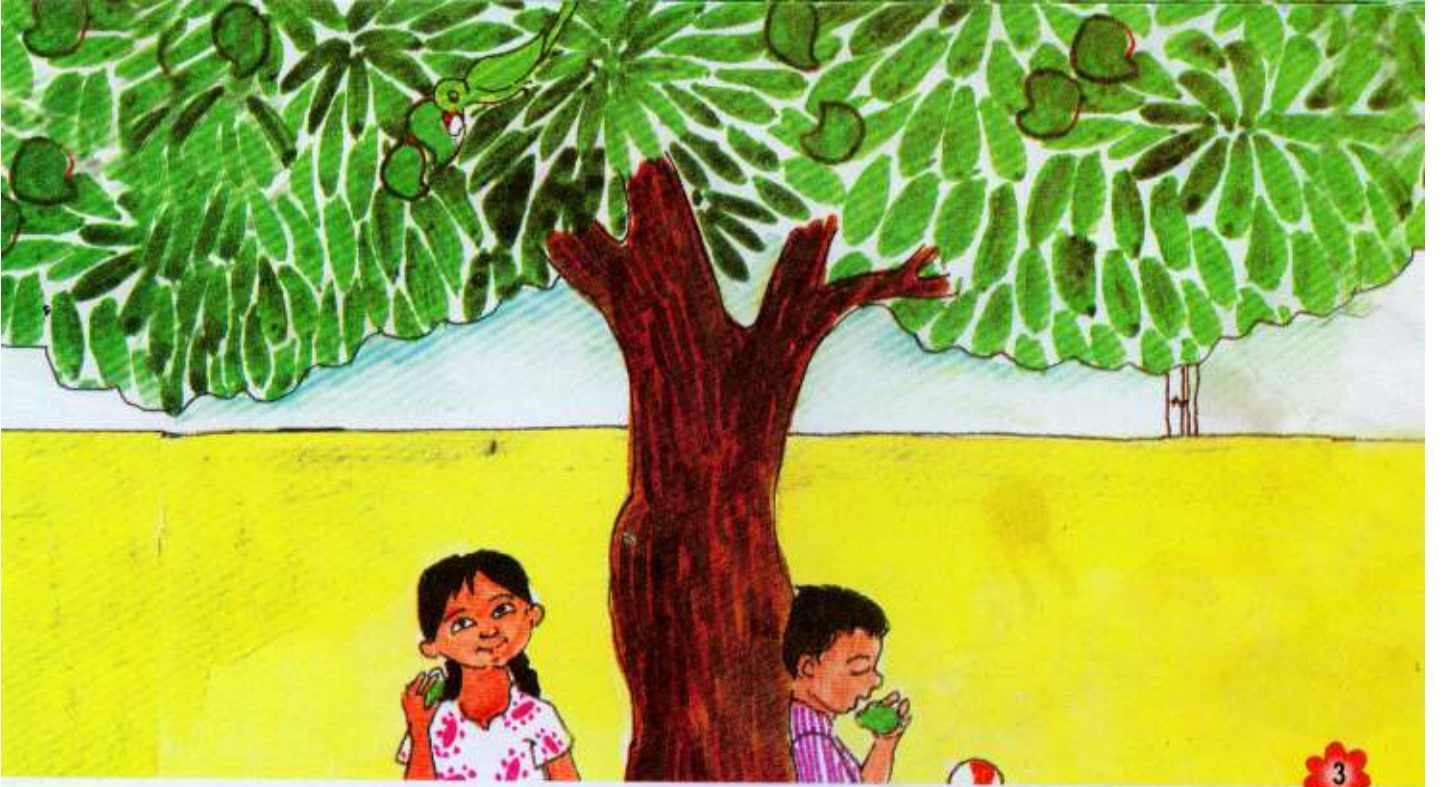
उस पेड़ के आम कभी पक ही नहीं पाते थे।
बच्चे कच्चे आम ही खा जाते थे।
तोते भी हरे आम कुतरते रहते थे।
तोसिया भी कच्चे आम पर नमक लगाकर खाती थी।

स्कूल के पीछे एक छोटा-सा तालाब था।
तालाब के किनारे एक बड़ी-सी चट्टान थी।
तोसिया की माँ उस चट्टान पर कपड़े धोती थी।
तोसिया भी अपनी माँ के साथ वहाँ आती थी।
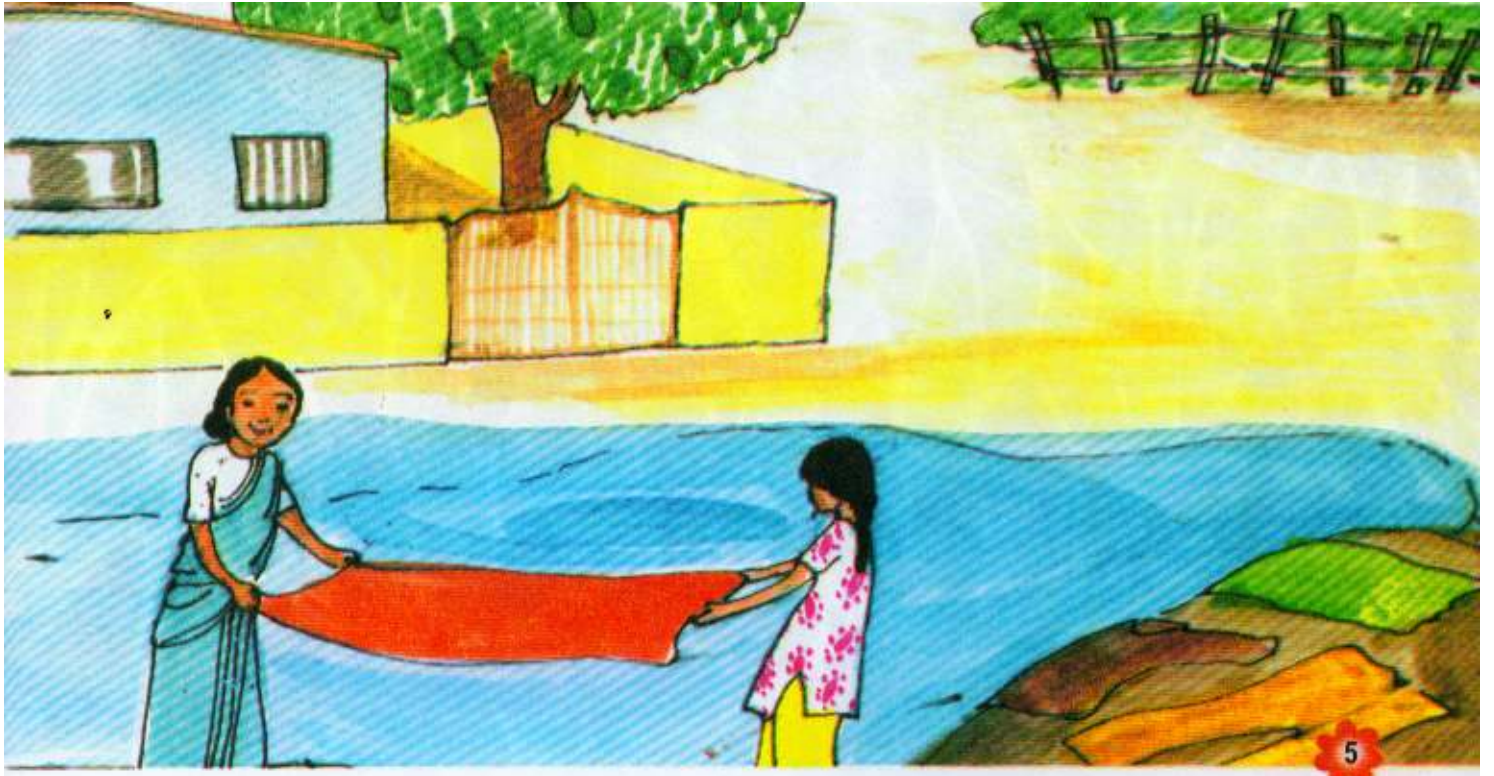
एक दिन तोसिया माँ के साथ तालाब पर आई।
तोसिया ने माँ के साथ कपड़े धुलवाए।
उसने माँ के साथ कपड़े चट्टान पर सूखने के लिए डाले।
कपड़े सुखाते समय उसकी नज़र आम के पेड़ पर गई।

तोसिया ने देखा सबसे ऊँची डाली पर एक आम था।
वह आम बिल्कुल पका हुआ था।
आम पत्तों के बीच में छुप गया था।
उसे न तोतों ने देखा था न बच्चों ने।

उस दिन तेज़ धूप थी इसलिए कपड़े जल्दी सूख गए।
तोसिया ने माँ के साथ कपड़े उठवाए।
फिर वे दोनों घर की तरफ़ चल पड़ीं।
तोसिया चलते-चलते आम को ही देख रही थी।

घर में सबने दोपहर का खाना खाया।
खाना खाकर सब सो गए।
तोसिया चुपचाप घर से निकल कर बाहर आ गई।
उसने चप्पल नहीं पहनी जिससे कि आवाज़ न आए।

तोसिया नंगे पैर स्कूल पहुँची।
तोसिया ने स्कूल के फ़ाटक पर चढ़ने की कोशिश की।
फ़ाटक का लोहा बहुत गरम हो गया था।
तोसिया फ़ाटक पर चढ़ नहीं पाई।
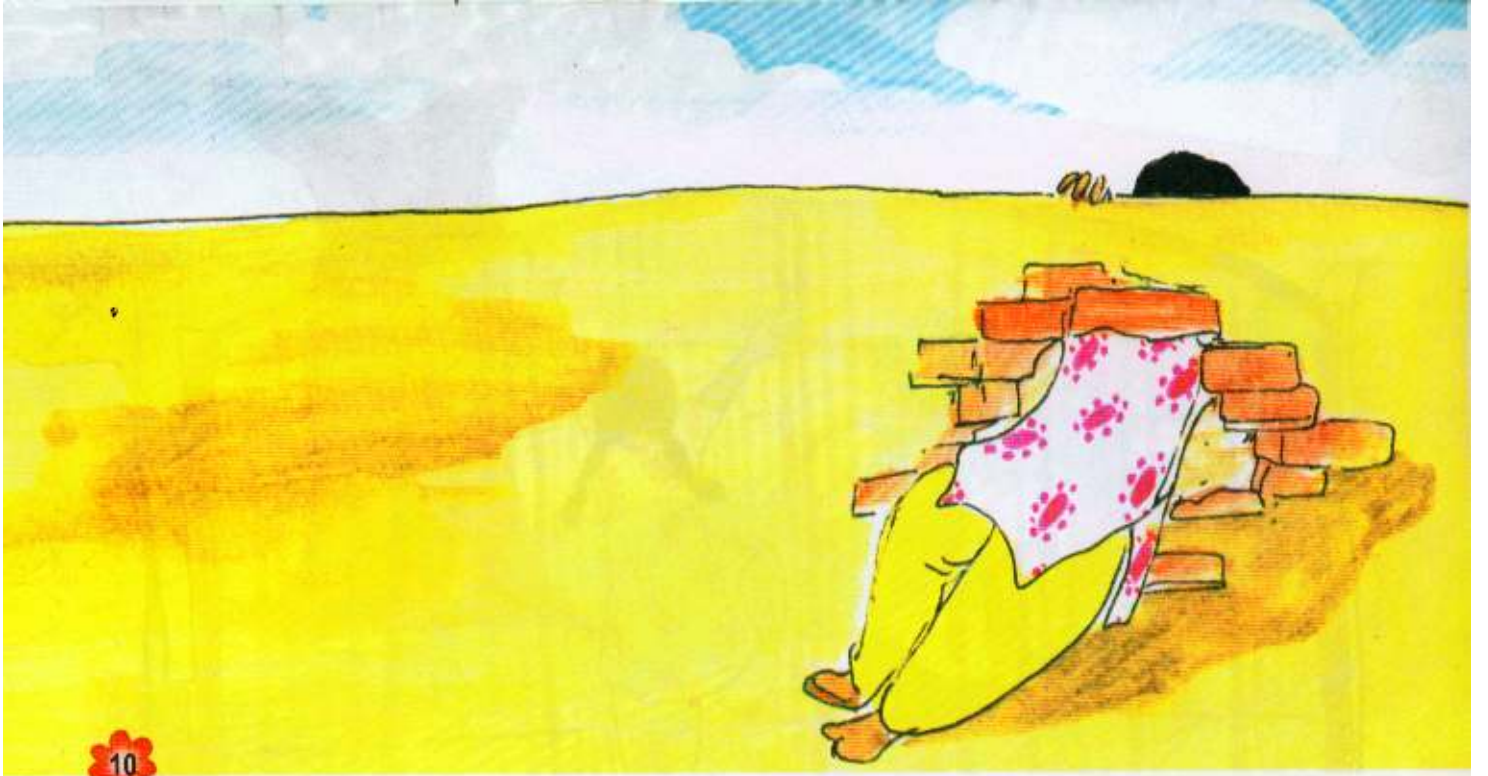
तोसिया स्कूल की चारदीवारी के साथ-साथ चली।
वह उस कोने में पहुँची जहाँ कुछ ईंटें निकली हुई थीं।
तोसिया उन ईंटों के सहारे दीवार पर चढ़ी।
वह आसानी से दीवार के उस पार कूद गई।

स्कूल में सन्नाटा था।
सारे कमरों पर ताला लगा हुआ था।
तोसिया भाग कर आम के पेड़ के पास पहुँची।
उसे पेड़ पर चढ़ना अच्छी तरह आता था।

तोसिया तने को पकड़ कर ऊपर चढ़ी।
वह एक डाल से दूसरी डाल पर चढ़ रही थी।
तोसिया डाल पर अपने पैर जमा कर रखती थी।
आखिर तोसिया सबसे ऊँची डाल पर पहुँच ही गई।

पका हुआ आम तोसिया की आँखों के सामने था।
आम काफ़ी बड़ा और पीला था।
तोसिया ने चारों तरफ़ देखा।
तालाब के किनारे कोई भी नहीं था।

तोसिया ने हाथ बढ़ाकर आम तोड़ लिया।
नाक के पास लाकर उसे सूँघा।
तोसिया थोड़ी देर तक डाल पर ही बैठी रही।
उसे आम की खुशबू अच्छी लग रही थी।

तोसिया सावधानी से पेड़ से नीचे उतरी।
वह पेड़ की छाया में बैठ गई।
तोसिया ने आराम से चूस-चूसकर आम खाया।
उसने आम की गुठली भी चूसी।

तोसिया स्कूल की दीवार फाँदकर बाहर आ गई।
वह दौड़कर घर पहुँची।
घर में सब सो रहे थे।
तोसिया भी हाथ धोकर सो गई।

स्तर 1
स्तर 2
स्तर 3
स्तर 4
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें
2094
रु. 10.00
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND